

जानकारी का विकास हो पायेगा।

उपर्युक्त वर्णन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भूगोल का ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी महत्ता के अन्दर दो मुख्य बातों का उल्लेख किया गया है कि भूगोल विषय, पृथ्वी और पृथ्वी के प्राणियों का जिस पर छात्र रहते हैं, ज्ञान अधिक अच्छी तरह दे सकता है। दूसरे, वर्तमान विश्व-अशान्ति और असमानता के समय में इस विषय का ज्ञान छात्रों में एक उदार और सद्भावनापूर्ण दृष्टिकोण पैदा कर सकता है, जो किसी भी देश के अच्छे नागरिक के लिए आवश्यक है।

उपर्युक्त मुख्य उद्देश्यों के अतिरिक्त भूगोल पढ़ने के और भी अन्य उद्देश्य हैं। यहाँ यह उपयुक्त होगा कि हम कुछ प्रसिद्ध भूगोलवेत्ताओं के अभिमतों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करें कि भूगोल शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ? तभी हम अन्तिम निर्णय पर पहुँच सकेंगे कि भूगोल शिक्षण के उद्देश्य क्या हैं अथवा हम भूगोल क्यों पढ़ते या पढ़ाते हैं ?

एल. डी. स्टाम्प (Stamp, L. D.) के शब्दों में, भूगोल शिक्षण का उद्देश्य बालक की समीपस्थ वातावरण तथा दैनिक जीवन की घटनाओं में रुचि पैदा करना है। स्टाम्प महोदय का तात्पर्य यहाँ व्यावहारिक पक्ष की ओर है। भूगोल अध्ययन का उद्देश्य यह है जहाँ पर भी छात्र रह रहा है वहाँ की परिस्थितियों में वह अपने को भली प्रकार समझकर ढाल ले और दैनिक क्रियाकलापों में सफलतापूर्वक भाग ले सके, परन्तु यह उद्देश्य बहुत ही सीमित है।

डब्ल्यू. पी. वाल्पटन (Walpton, W. P.) के अनुसार, भूगोल शिक्षण का लक्ष्य शैक्षिक व व्यावहारिक न होकर सांस्कृतिक है। उनके अनुसार भूगोल शिक्षण का मुख्य उद्देश्य मनुष्यों तथा नागरिकों को इस प्रकार शिक्षित करना है कि वे विश्व के विभिन्न देशों की समस्याओं को समझें, वहाँ के लोगों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर सकें तथा इनके आधार पर अपनी उन्नति में मार्गदर्शन ले सकें।

श्री वाल्पटन महोदय का उद्देश्य बहुत कुछ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित हुआ है। आज यूनेस्को आदि संस्थाएँ भी भूगोल शिक्षण का यही उद्देश्य मानकर चलती हैं, परन्तु यह अकेला उद्देश्य भूगोल शिक्षण का उद्देश्य नहीं हो सकता। केवल आदर्श की पृष्ठभूमि ही नहीं, व्यवहार की पृष्ठभूमि भी आवश्यक है। पुनश्च यह उद्देश्य बहुत ही ऊँचा उद्देश्य है जो आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

चार्ल्स ए. मैकमेरी के अनुसार भूगोल शिक्षण का उद्देश्य पृथ्वी को अमूल्य सम्पदा एवं इसका समुचित उपयोग कैसे हो, यह ज्ञान कराना है। मैकमेरी महोदय का अभिप्राय पृथ्वी के विशाल प्राकृतिक भण्डारों, सम्पदाओं, क्षमताओं का ज्ञान कराना है। साथ ही इन सम्पदाओं का कैसे समुचित उपयोग हो, यह ज्ञान भूगोल

के विद्यार्थी को होना चाहिए। यह उद्देश्य भी भूगोल शिक्षण के अनेक उद्देश्यों में से एक है। वस्तुतः आज तो बुरी तरह से प्राकृतिक भण्डारों का हास और उपयोग किया जा रहा है, उसे रोका जा सकता है। अनेक सम्पदाओं का पता लगाया जा सकता है।

ब्रेनम महाशय के अनुसार भूगोल शिक्षण का उद्देश्य विभिन्न नगरों, व्यवसायों के स्थापन, विभिन्न जातियों के कमजोर और शक्तिशाली आदि होने पर भौगोलिक कारणों का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका ज्ञान देना तथा स्वयं जहाँ वे रहते हैं उसका विश्व के अन्य भागों के जीवन और अनुभव से क्या सम्बन्ध है, इसका ज्ञान देना है। ब्रेनम का दृष्टिकोण भी सीमित जान पड़ता है। वे केवल भौगोलिक वातावरण के प्रभाव तक ही भूगोल शिक्षण की इतिश्री समझ लेते हैं। छात्रों के उदार दृष्टिकोण के निर्माण, प्रत्येक बात को तार्किक ढंग से सोचने की क्षमता आदि विकसित करने की ओर उनका ध्यान नहीं गया है।

श्री बी. सी. वैलिस भूगोल शिक्षण के दो लक्ष्य मानते हैं। पहला, छात्रों को इस प्रकार शिक्षा देना कि समग्र जगती के मनुष्यों को कुटुम्बी जन समझें। दूसरा, वे भौगोलिक वितरण की भौगोलिक व्याख्या करने में निपुणता प्राप्त कर सकें। श्री वैलिस महोदय ने दो बातों को अपने उद्देश्य में लिया है। परन्तु वैलिस महोदय के उद्देश्य नागरिकता, जीविकार्जन तथा अनेक पहलुओं को नहीं लेते। अतः ये उद्देश्य भी पर्याप्त नहीं हैं।

जेस्पर एच. स्टैमब्रिज के अनुसार भूगोल शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को संसार और उसके परिवर्तनशील वातावरण तथा वातावरण और मनुष्य के परस्पर सम्बन्ध की जानकारी देना होना चाहिए। इसके अतिरिक्त छात्रों को सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का भौगोलिक परिस्थितियों से सम्बन्ध एवं समस्याओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण उत्पन्न करना होना चाहिए। यह परिभाषा कई दृष्टिकोणों को लेकर चलती है, परन्तु फिर भी पूर्ण नहीं कही जा सकती।

अब हम भूगोल शिक्षण के जगत-प्रसिद्ध लेखक जेम्स फेयरग्रीव की परिभाषा को उद्धरित करते हैं। इनके अनुसार भूगोल शिक्षण के उद्देश्य "भावी नागरिकों को वृहत् विश्व-क्षेत्र की दशाओं की वास्तविक कल्पना करने में शिक्षित करना है और इस प्रकार दुनिया में होने वाली राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं के बारे में निष्पक्ष होकर विचार करने में सहायता करना है।"¹ इस परिभाषा से अभिप्राय यह है कि भूगोल शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को विश्व रंगमंच के सही स्वरूप का ज्ञान कराना है। 'सही स्वरूप' शब्द व्यापक है। इसका अभिप्राय यह भी है कि कोई देश यदि सम्पन्न है तो इसलिए है कि उसने प्राकृतिक सम्पदाओं का अच्छी तरह शोषण किया है अथवा प्राकृतिक सम्पदाओं से सम्पन्न है। इसके

¹ "The function of Geography is to train future citizens to imagine accurately the conditions of the great stage and so to help them to think sanely about political and social problems in the world around."

—James Fairgrieve

विपरीत जो देश निर्धन है, वह प्राकृतिक सम्पदाओं का पूर्ण उपभोग न कर सकने के कारण है। अतः जो निर्धन देश हैं अथवा अन्य किसी कारण से अपने देश की सम्पदाओं का समुचित उपयोग नहीं कर पाये हैं, उनके प्रति हमें हेय दृष्टि से न देखकर उन्हें उचित सम्मान देना चाहिए। उनके दुःख और समस्याओं से हमें सहानुभूति होनी चाहिए।

इस सम्बन्ध में एक और नाम प्रोफेसर फ्रैंक डेवनहम का लिया जा सकता है। भूगोल शिक्षण में वे तीन बातों को सम्मिलित करते हैं—

1. वितरण के कारणों को स्पष्ट कर सकने की क्षमता पैदा करना।
2. मानव-जीवन और वातावरण में सहसम्बन्ध को समझने की क्षमता पैदा करना।
3. मानव और प्राकृतिक शक्तियों के पारस्परिक क्रियाकलापों को समझने का प्रयास करना।

इस परिभाषा के अनुसार केवल छात्रों का ज्ञानात्मक विकास तो होगा परन्तु भावात्मक एवं संवेगात्मक विकास सम्भव नहीं हो सकेगा। आज के युग में जबकि विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है और मानव सभ्यता तृतीय विश्वयुद्ध के कगार पर खड़ी है, छात्रों की भावात्मक एवं संवेगात्मक शक्तियों का विकास परमावश्यक है।

✓ प्रो. होल्डज महोदय ने भूगोल शिक्षण के उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया है—(1) व्यावहारिक, (2) सांस्कृतिक। निम्न तालिका से ये उद्देश्य स्पष्ट हो जायेंगे—

भूगोल शिक्षण के उद्देश्य

(प्रो. होल्डज के अनुसार)



- | | |
|--|---|
| <ol style="list-style-type: none"> 1. भूगोल द्वारा स्थल सम्बन्धी ज्ञान, 2. भूगोल द्वारा व्यवसाय, कृषि तथा उद्योग-धन्धों का ज्ञान, 3. जीवन के लिए विभिन्न प्रदेशों की भौगोलिक परिस्थितियों की सूझ, 4. समाचार-पत्रों और पुस्तकों में आने वाले सन्दर्भों का स्पष्टीकरण एवं 5. पर्यटन की इच्छा जाग्रत करना। | <ol style="list-style-type: none"> 1. स्वदेश-प्रेम की उत्पत्ति, 2. प्राकृतिक सौन्दर्य का सच्चा ज्ञान, 3. वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना, सद्भाव, सहयोग और सहानुभूति पैदा करना। 4. मानव और पृथ्वी सम्बन्धी दृष्टि से संसार की वस्तुओं का मूल्यांकन एवं 5. भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार मानव-जीवन अनुकूलन। |
|--|---|

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर अब निष्कर्ष रूप में भूगोल शिक्षण के अग्रलिखित उद्देश्य हो सकते हैं—